स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय,नांदेड

मानव्य विद्या कला संकाय अंतर्गत विद्यावाचस्पति (Ph.D.) हिंदी उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध प्रबंध की रूपरेखा

(Ph.D.Synopsis)

शोध का विषय

“मंजुल भगत के उपन्यासों की कथावस्तु और सामाजिक मूल्य”

शोधकर्ता
आडे कल्पना हरीलाल
(M.A.B.Ed.M.Phil.)

शोधनिर्देशक
डॉ. सविता किर्ते
(M.A.Ph.D.SET.)
हिंदी विभाग
कै. सुशिला देवी देशमुख वरिष्ठ महाविद्यालय, लातूर

अनुसंधान केन्द्र
हिंदी भाषा साहित्य अनुसंधान केन्द्र
दयानंद कला महाविद्यालय, लातूर

मई 2022

“मंजुल भगत के उपन्यासों की कथावस्तु और सामाजिक मूल्य”

विषयानुक्रमणिका

अनुक्रम	शीर्षक	पृष्ठांक
1.	भूमिका (Introduction)	3
2.	विषय चयन की प्रेरणा (Topic Selection Motivation)	4
3.	अनुसंधान का उद्देश्य (Research Objective)	4
4.	अनुसंधान की पध्द्तियाँ (Research Methods)	5
5.	अनुसंधान कार्य के शीर्षक (Title of Research Work)	5
6.	अनुसंधान कार्य (Research Work)	11
7.	अनुसंधान का महत्व (Importance of Research)	11
8.	अनुसंधान की उपयोगिता (Research Utility)	12
9.	अनुसंधान की उपलब्धियाँ (Research achievements)	12
10.	अनुसंधान कार्य की मौलिकता (Originality of Research Work)	13
11.	अनुसंधान कार्य की व्याप्ति और सीमाएँ (Research scope and limitations)	14
12.	मूल्यांकन एवं निष्कर्ष (Evaluation and conclusion)	14
13.	**परिशिष्ट (Appendix)** (अ) मूल ग्रंथ (आ) आधार ग्रंथ (इ) हिन्दी कोश ग्रन्थ (ई) पत्र-पत्रिकाएँ (उ) अंग्रेजी ग्रन्थ (ऊ) Websites	

“मंजुल भगत के उपन्यासों की कथावस्तु और सामाजिक मूल्य”

1. भूमिका (Introduction) :

‘उपन्यास’ एक सर्वाधिक लोकप्रिय साहित्यिक विधा है। आधुनिक हिन्दी साहित्य विकास में ‘उपन्यास’ विधा का बहुत बड़ा योगदान रहा है। इसका सीधा संबंध मानव-समुदाय से होता है। इसका आधार यथार्थ जीवन है, तथा देखने का दृष्टिकोण वस्तुवादी और यथार्थोन्मुख है। समाज का वास्तविक रूप में प्रस्तुत करने का प्रबल माध्यम ‘उपन्यास’ ही है। ‘उपन्यास’ में किसी-न-किसी स्तर पर रोचकता या मनोरंजन के गुण उपस्थित हैं। जिसके कारण यह पाठकों के मन को बांधकर रखने की क्षमता रखता हैं। जब व्यक्ति कुछ विचार विमर्श करता है, तो उसके मन और मस्तिष्क में बहुत सारे भाव उत्पन्न होने लगते हैं। उन भावों को रूप देने के लिए वह लेखन का प्रयोग करता है। इस दृष्टि से भावों और विचारों की अभिव्यक्ति के लिए ‘उपन्यास’ बेहतर है।

आज आधुनिक समय में उपन्यास एक ऐसी विधा है, जिसमें कोई भी लेखक अपने भावों एवं विचारों को पूरी आत्मीयता एवं स्वतंत्रता के साथ अभिव्यक्त कर सकता है। इसी कारण हिंदी साहित्य की विधाओं में ‘उपन्यास’ विधा का अपना विषेश स्थान है। शायद यही मेरी वजह रही कि, मैंने अपने विचारों को और अधिक विस्तार देने के लिए अपना रुख उपन्यास की ओर आकर्षित किया है। इसीलिए शोधकार्य करने के लिए “मंजुल भगत के उपन्यासों की कथावस्तु और सामाजिक मूल्य” का चयन किया है। साठोत्तर हिन्दी लेखिकाओं में श्रीमती मंजुल भगत का गणनीय स्थान है । तत्कालीन सामाजिक व वैयक्तिक मन की अवस्था को अनुभवित करके उन्होंने अपने उपन्यासों में स्वाभाविकता एवं यथार्थता लाने का प्रयास किया है। मंजुल भगत साहित्य जगत के लिए स्तुति तुल्य है । मंजुल जी इतनी संवेदनशील लेखिका है कि, साहित्यिक क्षेत्र में एक नामी समाजिक मूल्य की लेखिका का स्थान प्राप्त कर चुकी है । स्त्री-सशक्तीकरण के इस युग में मंजुल जी जैसी लेखिकाओं का रचनात्मक योगदान स्मरणीय है । इसी उद्देश्य से मैंने उनकी रचनाओं पर विशेष अध्ययन करने का निर्णय लिया है। मेरे शोध प्रबंध का विषय है,“मंजुल भगत के उपन्यासों की कथावस्तु और सामाजिक मूल्य” है।

2. विषय चयन की प्रेरणा (Topic Selection Motivation) :

मैंने हाली में उनके ‘अनारो’ उपन्यास पर एम.फिल. का लघु शोध कार्य पूर्ण किया है, इस उपन्यास की नायिका ‘अनारो’ पात्र मुझे क्या, किसी के भी दिल को छू लेने वाली नारी पात्र है। वैसे देखा जाए तो मुझे उनके ‘अनारो’ उपन्यास में नारी संवेदना इतनी अच्छी लगी कि,अन्य उपन्यासों को भी पढ़ने की जिज्ञासा मन मे निर्माण हुई। और मैनें सोचा की क्यों न पीएच-डी. शोध कार्य के लिए मैं मंजुल

भगत के समग्र उपन्यासों की कथावस्तु और सामाजिक मूल्य का अध्ययन करूं। बस यही बात मैंने मेरे मार्गदर्शक डॉ. सविता किर्ते मॅडम से कहा, तो उन्होंनें मंजुल भगत के उपन्यासों की सक्षिप्त कथावस्तु पढ़ ली, और तुरंत मुझसे कहा कि, हॉं बहुत सही उपन्यास है, आज के युग में सामाजिक मूल्य एवं नारी संवेदना' को उन्होंने अपने ढंग से प्रस्तुत किया है। मेरी तरफ से तो उनके उपन्यासों पर शोधकार्य के लिए अनुमती है। और इसी तरह विषय का चयन हुआ।

3. अनुसंधान का उद्‌देश्य (Research Objective) :

साहित्य समाज का दर्पण है। समाज में जो अच्छा एवं बुरा होता है, साहित्यकार उसे अपने साहित्य में स्थान देता है। समाज में जिस व्यवस्था की तत्कालीन समय में आवश्यकता होती है, उस व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए भी साहित्य की रचना की जाती है, अथवा किसी विशेष कार्य के लिए ऐसे विशेष विषय का चयन किया जाता है। "मंजुल भगत के उपन्यासों की कथावस्तु और सामाजिक मूल्य" इस अनुसंधान कार्य के पीछे मेरे अहम् उद्देश्य है, जो इस प्रकार है।

1. सामाजिक मूल्य को व्यक्तिगत भावभूमि से उपर उठाकर सामाजिकता के स्तर पर पहुॅंचाना।
2. आज भी नारी, समाज शोषित-पीड़ित है। इसी पीड़ित प्रवृत्तियों को परखना एवं उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करना।
3. उत्तर आधुनिकता की दौड़ में शहरीकरण के कारण गॉंव का प्रत्येक व्यक्ती शहर की ओर स्थलांतर करना चाहता है,या फिर कर रहा है। मूलत: स्थलांतर के साथ-साथ अपने शहर के भाग दौड़ को दुनियाँ में 'सामाजिक मूल्य' को भूल गया है। ऐसे व्यक्तियों को 'सामाजिक मूल्य' के प्रति सजग करना ही मेरे अनुसंधान का उद्देश्य है।
4. मंजुल भगत का शिल्प विधाना मूलत: स्वानुभूत सत्य है। इस भाषा, शैली, शब्द प्रयोग को परखना मेरे अनुसंधान का उद्देश्य रहा है।

इस दृष्टि से "मंजुल भगत के उपन्यासों की कथावस्तु और सामाजिक मूल्य" का व्यापक परिचय देना तथा कुछ रहस्यों को खोलना ही इस शोधकार्य का मूल लक्ष्य रहा है। इनके उपन्यासों 'सामाजिक मूल्य' का यथार्थ रूप चित्रित हुआ है। ऐसी ही 'सामाजिक मूल्य' का परिवेश हम पर भी प्रभाव डालता है, जो हमारे ही अनुभवों से जुड़ जाता है। मेरा उदेश्य और लक्ष्य उपन्यास से संबंधित 'सामाजिक मूल्य' को अवगत कराना है। इस दृष्टि से मुझे "मंजुल भगत के उपन्यासों की कथावस्तु और सामाजिक मूल्य" इस विषय पर शोधकार्य करने का निश्चिय किया है। की व्यापक अभिव्यक्ति हुई है। मैंने अपने शोध कार्य में मंजुल भगत जी के उपन्यासों में 'सामाजिक मूल्य' पर विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया है। इस अध्ययन में मैंने उनके उपन्यासों की 'नारी संवेदना' एवं 'सामाजिक मूल्य' पर विशेष रूप से

ध्यान दिया है। उनके उपन्यास साहित्य में 'नारी संवेदना' एवं 'सामाजिक मूल्य' की टकराहट पर्याप्त चर्चा का विषय बनी हुई है।

4. अनुसंधान पध्द्तियाँ (Research Methods) :

ज्ञान का कोश इतना विस्तृत है कि, इसे समग्र रूप से प्राप्त नहीं किया जा सकता। इसलिए अध्ययनार्थी को उसे छोटे-छोटे भागों में विभाजित कर ज्ञान ग्रहण कर पड़ता है । इसलिए शोध कार्य की व्यापकता को देखकर मैंने "मंजुल भगत के उपन्यासों की कथावस्तु और सामाजिक मूल्य" को निम्नलिखित अनुसंधान पद्धतियों का सहारा लिया है। जैसे अध्ययन-अध्यापन पद्धति, सर्वेक्षण पद्धति, प्रयोगात्मक पद्धति, पूर्व अनुसंधान व्यक्ति से साक्षात्कार प्रश्नावली पद्धति तथा निष्कर्ष पद्धति आदि का सहारा लिया है।

5. अनुसंधान कार्य शीर्षक: (Research Work of Titel):

अध्ययन की सुविधा के लिए मैंने इस शोधकार्य "मंजुल भगत के उपन्यासों की कथावस्तु और सामाजिक मूल्य" को निम्नांकित छ अध्याय शीर्षक के आधार पर विभाजित किया है। मंजुल भगत का उपन्यास साहित्य 'नारी जीवन' एवं 'सामाजिक मूल्य' को केन्द्र में रखकर रचा गया है। मंजुल भगत के उपन्यास की कथावस्तु और सामाजिक मूल्य" का अध्ययन करना इस शोध का उद्देश्य है। इसमें मैंने मंजुल भगत के निम्नलिखित छ अध्याय पर विश्लेषणात्मक अध्ययन किया है।

पहला अध्याय : मंजुल भगत : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

दूसरा अध्याय : मंजुल भगत के उपन्यासों की कथावस्तु

तीसरा अध्याय : मंजुल भगत के उपन्यासों में व्यक्त नारी संवेदना

चौथा अध्याय : मंजुल भगत के उपन्यासों में व्यक्त सामाजिक मूल्य

पाँचवा अध्याय : मंजुल भगत के उपन्यासों में स्त्री पात्रों का मनोवैज्ञानिकता

छठा अध्याय : मूल्यांकन एवं निष्कर्ष

उपसंहार प्रस्तुती के बाद निष्कर्ष निकाला गया है, परिशिष्ट में, आधार ग्रंथ, मूल ग्रंथ एवं पत्र-पत्रिकाओं की सूची दी गई है।

6. अनुसंधान कार्य (Research Work) :

हिन्दी उपन्यास साहित्य का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत है । अत: इसी विस्तार को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत प्रसिद्ध महिला उपन्यासकार "मंजुल भगत के उपन्यासों की कथावस्तु और सामाजिक मूल्य" को आधार बनाकर विषय के रूप में चयन किया गया है। उपर्युक्त सर्वेक्षण से यह स्पष्ट हो जाता है कि, प्रस्तुत अनुसंधान कार्य निम्नलिखित शीर्षक के आधार पर किया गया है। यह अनुसंधान कार्य अध्ययन की दृष्टि से अभी तक पूरी तरह अछूता है । "मंजुल भगत के उपन्यासों की कथावस्तु और सामाजिक मूल्य"

का अध्ययन के पश्चात मैं, इस निष्कर्ष पर पहुंची हूँ कि, एक नारी होने के नाते लेखिका ने नारी हृदय को जानकर, नारी संवेदनाओं को सामने लाकर, उसके समाधान भी ढूँढ़ निकालने का सशक्त प्रयास किया है। अत: मंजुल जी के उपन्यासों में अधिकांश केन्द्रीय 'स्त्री पात्र का मनोवैज्ञानिक' अध्ययन ही है। नारी मुक्ति की कामना, स्वावलंबन-प्रियता एवं विद्रोही भावना की झलक इनके उपन्यासों में विद्यमान हैं। 'नारी संवेदना' के जरिए अनुभवित वास्तविकता को समाज के सामने खोल देना आपका लक्ष्य रहा है। मंजुल जी नारी की स्वतंत्रता एवं उन्नति ही चाहती है। पर इसके लिए अपनी भारतीय संस्कृति छोड़ी नहीं। इससे यह पता चलता है कि, लेखिका भारतीय 'सामाजिक मूल्य' पर पूर्ण रूप संजेदनशील रही है।

पहला अध्याय

मंजुल भगत : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

मंजुल भगत जी का कृतित्व बहु आयामी है। वे उन विभूतियों में से हैं, जिन्होंने हिन्दी साहित्य को नई शक्ति प्रदान की है। बहुमुखी प्रतिभा संपन्न होने के कारण उनका व्यक्तित्व तथा जीवन समाज को प्रेरणा देने वाली है। अपने साहित्य में उन्होंने जीवन के अनुभवों को विशिष्ठ शैली में चित्रित किया है,जिसका पाठक के मन पर अमिट प्रभाव पड़ता है। अनेक विधाओं में लिखने के कारण हिन्दी साहित्य में उनका मूर्धन्य स्थान है। निबन्ध, कहानी, उपन्यास, काव्य तथा प्रेरणापरक रचना करके साहित्य में उनका महत्त्वपूर्ण स्थान है। उनके कृतित्व का लक्ष्य मानव तथा राष्ट्र के लिए उत्तम जीवन की खोज है। साहित्य की विभिन्न विधाओं पर लिखने के कारण उनको सरकारी तथा गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा बहुत बार पुरस्कृत तथा सम्मानित किया गया है।

हिंदी साहित्य में 'नारी' अस्मिता का वह आंदोलन है, जो हाशिए पर छोड़ दिए गए नारी अस्तित्व को फिर से केंद्र में लाने और उसकी मानवीय गरिमा को प्रतिष्ठित करने का अभियान है। नारी को सामाजिक संरचना में दूसरे दर्जे पर रखने का मुखर विरोध और 'नारी' को एक जीवंत मानवीय ईकाई के रूप में स्वीकार करने का प्रयास मंजुल भगत जी ने किया है।

दूसरा अध्याय

मंजुल भगत के उपन्यासों की कथावस्तु

इस अध्याय में मैंने मंजुल भगत के उपन्यासों की कथावस्तु का अध्ययन किया है। किसी भी कथा-सृजन के लिए ये कथ्य अनिवार्य हैं। 'कथ्य' ही उपन्यास की आत्मा कहलाता है। विशेष रूप से उनके उपन्यासों के क्रम से कथावस्तु को स्पष्ट किया है। इसे समझने के लिए अत्यंत आवश्यकता महसूस होती है। कथावस्तु, पात्रों का चित्रण, संवाद योजना, देशकाल तथा वातावरण स्थिति, के साथ ही उद्देश्य को स्पष्ट किया गया है।

कथावस्तु या कथानक का अर्थ है, 'ढाँचा' जो उपन्यास में वर्णित विभिन्न घटनाओं, वर्णनों व चरित्रों को आपस में बाँधता है। एक मजबूत कथानक वह है, जिनमें ये सही अनुपात में हो और गति भी अधिक कम या ज्यादा न हो ताकि पाठक को रचना से तारतम्यता बिठाने में कठिनाई महसूस न हो। वहीं कथावस्तु का संबंध स्रोत से है। उपन्यास के विषय-वस्तु का स्रोत उपन्यासकार ने कहाँ से लिया है- इतिहास, कल्पना या इन दोनों के मिश्रण से कथानक होता है।

हिंदी साहित्य के उपन्यास जगत में 'मंजुल भगत' जी का लेखन क्षेत्र प्रतिभा का परिचय दिया। उनके उपन्यासों का आकार लघु है। उनकी उपन्यास के संबंध में मृदुला गर्ग कहती हैं,"लघु उपन्यास मंजुल की क्रीड़ास्थली थी।" मंजुल जी के उपन्यास आकार से छोटा और लघु क्यों न हो, उसमें सामाजिक मूल्य की गहरी छाप जरूर दिखेगी। इनके उपन्यास आकार से भले ही लघु हो,परन्तु भावों, विचारों एवं सामाजिक मूल्य की संवेदनाओं की दृष्टि से महाव्याख्यान से कम नही। 'मंजुल भगत' ने सदैव यह प्रयास कि, अपने अनुभवों और अपनी संवेदनाओं को सच्चाई और खरेपन के साथ चित्रण करें और उसमें उन्हें सफलता भी मिली। वे अपने लेखन के प्रति ईमानदार है। उनकी उपन्यासों की कथावस्तु इस प्रकार से है।

1. **'टूटा हुआ इन्द्रधनुष'** यह मंजुल भगत का पहला उपन्यास है। उनका पहला उपन्यास होते हुए भी इसमें आरंभिक उपन्यास जैसी कमजोरियाँ नहीं है। इस उपन्यास की शीर्षक को स्पष्ट करते हुए कमल किशोर गोयनका लिखते है,"जीवन एक इन्द्रधनुष है, लेकिन वह टुटा हुआ है, अर्थात् यह जीवन सुन्दर है, आनन्दपूर्ण है, परन्तु यह माया के कारण ऐसा प्रतीत होता है अन्यथा वह मिथ्या है, असत्य है, नश्वर है। उपन्यास की नायिका 'शोभना' अपने प्रेमी मनीष से विवाह नहीं करना चाहती क्योंकि उससे ऊब पैदा होती है, और रिश्तों में कर्तव्य छाने लगता है, किन्तु शोभना प्रभात से शादी करने तथा एक बेटे को जन्म देने के पश्चात भी 'मनीष' से संबंध रखती है, तथा गर्भवती हो जाती है। उस अवैध सन्तान को 'प्रभात' स्वीकारती है। लेखिका ने दार्शनिक प्रश्नों को दर्शन की सूक्ष्मताओं से नहीं बल्कि जीवन की कुछ अनोखी घटनाओं तथा स्त्री-परूष के प्रेम संबंधी एवं पति-पत्नि की वैवाहिक मर्यादाओं को बड़ी सरलता तथा सहजता से तोड़कर दिखाई हैं।

2. **'लेडीज क्लब'** लघु उपन्यास है। आकार की दृष्टि से बहुत छोटा होते हुए भी, यह उच्च वर्ग की महिलाओं का पूरा चिट्ठा खोल कर रख देता हैं। यह सामाजिक परिस्थितियों में उभरा एक सामाजिक व्यंग्य हैं। इसमें नारी दोहरेपन को लेकर जीते हैं, और अनेक खोखले आदर्श हैं। यह अभिजात्य अंहकार, मिथ्या प्रदर्शन, पति से असंतोष और अतृप्ति, परिवार की मर्यादा का उल्लंघन, पर-स्त्री के प्रति आकर्षण, आधुनिक बनने की चाह आदि प्रवृत्तियों को स्त्री व पु रुष पात्रों के माध्यम से चित्रित किया है।

3. **'अनारो'** मंजुल भगत को तीसरा उपन्यास हैं, जो 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' में सन् 1976 में प्रकाशित हुआ। 'अनारो' के माध्यम लेखक को प्रसिद्धी प्राप्त हुई। अनारो मंजुल भगत की ऐसी नारी पात्र

है, जिसे जीवन के प्रत्येक मोड़ पर संघर्ष करना पड़ता है। 'अनारो' के रूप में एक जीवट वाली जीवंत नारी इस उपन्यास में चित्रित हुई है, जो जीवन की विषम परिस्थितियों में भी टूटती, गिर कर फिर सम्भल जाती हैं। 'अनारो' दूसरों के घर चौका-बर्तन कर गुजारा कर पति और दो बच्चों के साथ मदनगीर की झोपडपट्टी में रहती है। अनारो में जीवतता, संघर्षशीलता का तत्व अत्याधिक है, जो उसे जीवन की विद्रुपताओं के लिए सहनशीलता प्रदान करता है।

4. 'बेगाने घर में' मंजुल भगत का यह चौथा उपन्यास सन 1978 में प्रकाशित हुआ। आकार में छोटी होने के संबंध मे कमल किशोर गोयनका ने लिखा हैं,"सुदर्शन नारंग ने इसे लंबी कहानी मानते हुए लेखिका द्वारा उपन्यास कहने पर आपत्ति की, लेकिन आकार की दृष्टि से इतना छोटा नहीं है कि, इसे लम्बी कहानी कहा जा सके। यह उपन्यास आठ परिच्छेदों में विभक्त किया हैं, पीली कोठी का पिछवाड़ा, नीमतले, बड़ी बी, ज़नाना वार्ड, नौचंदी, टाल की आग, चबूतरे पर शाम और बेगाने घर में। इस उपन्यास में कई नारी पात्र हैं, किन्तु उनमें से कोई भी मुख्य पात्र न होकर सभी गौण पात्र हैं। उपन्यास के मुख्य पात्र किशोर चन्द्र है, उसकी तथा उसकी कोठी की देख-रेख के लिए नौकरों की भीड़ लगी है किन्तु किशोर चन्द्र के मृत्यु के बाद वसीयत के मुताबिक कोठी का मालिक बने किशोरचन्द्र का भतीजे और कोठी कैसे बेगाने होते और परायें लोग कैसे अपने होते है, इस तथ्यों को लेखक ने मेरठ आँचल की बोलियों के माध्यम से चित्रित की है।

5. 'खातुल' मंजुल भगत का पाँचवा उपन्यास हैं, जो सन् 1983 में प्रकाशित हुआ। यह एक अफगानी शरणार्थी लड़की की कहानी है जो अफ़गानिस्तान पर रूसी हमला के कारण दिल्ली आकर रहती है। दिल्ली में अमेरिका जाने के लिए वीजा का इन्तजार करती है, यहीं उसका और लेखिका का आत्मीय रिश्ता बन जाता है, उसका चित्रण किया है। हिन्दी में यह इस भावभूमि का पहला ही उपन्यास है, जो अफगान-समाज का चित्रण करता है।

6. 'तिरछी बौछार' यह मंजुल भगत का छठा उपन्यास हैं जो कि 1984 में प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास में लेखिका ने नारी की स्वत्व प्राप्त होने, अस्तित्व-बोध तथा स्वावलंम्बी होने पर उसकी सभी अरमान तुच्छ हो जाती है। उपन्यास की नायिका को अपने अन्य उपन्यासों की नायिकाओं की तुलना में अधिक अलग प्रस्तुत की हैं। उपन्यास की नायिका भरी-पूरी गृहस्थी को चलाते-चलाते प्रौने का अवसर प्राप्त होता है। साहित्यकार का जीवन ही उसकी रचना-प्रक्रिया है। साहित्यकार का जीवन में उसके एहसास और उसके विचार का उपज से ही उसके साहित्य का जन्म होता है अत: साहित्यकार का उसकी रचना-प्रक्रिया से संबंध उसके जीवन के अनुभवों से उनमें उत्पन्न विचारों को मूर्त रूप देने के प्रयत्न से ही प्रारम्भ होता हैं।

7. ‘गंजी’ मंजुल भगत का अंतिम उपन्यास है, जो सन् 1995 में प्रकाशित हुआ। उपन्यास की नायिका ‘गंजी’, जो ‘अनारो की बेटी के रूप में उपन्यास की मुख्य पात्र बनती है। ‘गंजी’ अपनी आर्थिक एवं सामाजिक प्रगति के कारण ही ‘शांति’ बनती है, जो रखैल के चंगुल में फँसे पति को झुड़ाकर सही रास्ते पर लाती है, तथा सिलाई सीखकर धनोपार्जन ही नहीं करती, बल्कि अपना ब्युटी पार्लर भी खोलती है, और परिवार को मजबूत आर्थिक आधार प्रदान करती है।

मंजुल भगत के उपन्यासों की कथावस्तु में सभी वर्ग की नारियाँ नजर आती है। उन्होंने उच्चवर्ग से लेकर निम्नस्तर की नारियों को लेकर लिखा है। सभी वर्ग की नारियों के मन और संवेदनाओं को पूर्ण रूप से खंगाल कर उनके मर्म की पीड़ा को वाणी दी है।

तीसरा अध्याय

मंजुल भगत के उपन्यासों में व्यक्त नारी संवेदना

इस अध्याय का महत्वपूर्ण आयाम नारी संवेदना है । इस अध्याय में मैंने “मंजुल भगत के उपन्यासों में व्यक्त नारी संवेदना” को रेखांकित किया है। उपन्यासों की ‘नारी संवेदना’ में चित्रित सामाजिक संवेदना, राजनीतिक संवेदना, धामिक संवेदना, आर्थिक संवेदना, सांस्कृतिक संवेदना एवं शैक्षिक संवेदना को चित्रित किया है । इन संवेदनाओं के अंतर्गत व्यक्ति, परिवार, शिक्षा, स्त्री-जीवन, जाति-प्रथा, धार्मिकता और संस्कृति का अवलोकन किया है। इसके साथ ही इसमें गाँव की बिखरी हुई संस्कृति और सामाजिक इकाई, का अध्ययन एवं विश्लेषण किया गया है।

“मंजुल भगत के उपन्यासों में व्यक्त नारी संवेदना” के तीसरे अध्याय में ठीक उसी दृष्टि से मंजुल भगत की उपन्यासों पर विचार किया गया है, और उपन्यासों में व्यक्त ‘नारी संवेदना’ की स्थिति बहुतही संवेदनशील रही है। मंजुल भगत के ‘नारी संवेदना’ संबंधी विशेषताओं के अध्ययन से संबन्धित उनके समग्र उपन्यास है। उपन्यासों में नारी चरित्र जो प्रेरणादायक, अनुभवी, दूरदृष्टा तथा परदु:खकातर हैं। इनमें संघर्ष करने की अदम्य शक्ति है।

मंजुल भगत ने अपने उपन्यासों में जहाँ समाज की अनमेल-विवाह, विधवा-विवाह, दहेज, तलाक, पुनर्विवाह, रखैल की समस्याओं को बहुत ही सूक्ष्मत: से दिखाया गया है। वहॉं राजनैतिक और आर्थिक संवेदना का भी परिचय दिया है। इसमें भारत की घातक राजनीति, गाँव की सामान्य से सामान्य घटनाएँ राजनीति से परिचालित, शिक्षा जैसे सांस्कृतिक क्षेत्र में राजनीति का बोलबाला, आदि संवेदनाओं का स्पष्टीकरण किया गया है। इस प्रकार मंजुल भगत द्वारा रचित समस्त उपन्यास यह ‘नारी संवेदना’ से भरा हुआ एक पिटारा है। समस्त उपन्यासों में ‘नारी संवेदना’ के जो भाव पैदा होते हैं, वे प्रत्येक भारतीय के लिए अत्यन्त आवश्यक है। देश-प्रेम, मानवीयता, देश-भक्ति, सेवा, धर्म, दर्शन, प्रशासन संबन्धी

जागरूकता, सामाजिकता, भाईचारे का जो संगम इनके साहित्य में निहित है, वह वास्तव में प्रासंगिक व महत्त्वपूर्ण है।

चौथा अध्याय

मंजुल भगत के उपन्यासों में व्यक्त सामाजिक मूल्य

मानवीय जीवनमूल्य का इतिहास सृष्टि के आदिकाल से अपनी धाराएँ निर्धारित करता हुआ वर्तमान तक क्रमबद्ध रहा है। प्रत्येक युग के महान चिन्तकों ने समयुगीन मानवजीवन के संबन्ध में विचार एवं चिन्तन कर विभिन्न धर्मो, दर्शनों एवं विचारधाराओं के रूप में जो निर्णय लिये वे युगीन जीवनमूल्य निर्धारित करने में सहायक सिद्ध हुए। मानवजीवन का परम्परागत प्रवाह प्रागैतिहासिक, ऐतिहासिक और आधुनिककाल में समकालीन परिस्थितियों के अन्तर्गत नूतन दिशा और क्षेत्र ग्रहण करता रहा है। यह धारा धार्मिक तथा सामाजिक आन्दोलनों, राजनीतिक दृष्टिकोन, व्यवस्थाओं और प्रवृतियों, वैज्ञानिक विश्लेषणों, खोजों और आविष्कारों, अर्थशास्त्रीय विवेचनों, सिद्धांतों और नियमों तथा सतत प्रवाहशील मानवीय विचारों संकल्पों और आचरणों से प्रभावित हुआ है। इस तरह से मैंने मंजूल भगत के उपन्यासों में व्यक्ति सामाजिक मूल्य का विकास किया है। 'मूल्य' का मामला व्यक्तिगत नहीं 'सामाजिक' है। पिछले कुछ दशक में हिंदी उपन्यास साहित्य में 'मूल्य साहित्य' पर का व्यापक रूप से लेखन हुआ है। यहाँ 'नारी' लेखन एक सामाजिक सच्चाई और अस्मिता के संघर्ष की चुनौती के रूप में सामने आता है। यह 'नारी' के अपने नजरिए से 'नारी' लेखन का नया पाठ है। तो इस अध्याय में मैंने मंजुल भगत के उपन्यासों में व्यक्त सामाजिक मूल्य का अध्ययन किया है।

सामाजिक जीवन मूल्य के संकीर्ण तथा अछूती गुत्थियों को मंजुल जी ने अत्यन्त सुन्दर ढंग से सुलझाया है। मंजुल जी ने अपनी रचना-प्रक्रिया में आधुनिक भारतीय सामाजिक व्यवस्था की विसंगतियों तथा नैतिक मूल्यों के पतन को अपनी लेखनी क्षमता के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

पाँचवा अध्याय

मंजुल भगत के उपन्यासों में स्त्री पात्रों की मनोवैज्ञानिकता

इस शोध विषय के माध्यम से 'नारी संवेदना' का चि्त्रण, समाज में नारी की पीड़ा घुटन समस्याओं से परिचित कराकर साहित्य को एक नई दृष्टि देने का मेरा एक नगण्य प्रयास होगा। मंजुल भगत के उपन्यासों में व्यक्त चित्रीत स्त्री पात्र मनोवैज्ञानिकता से प्रभावितत है। मंजुल भगत का संपूर्ण उपन्यास साहित्य 'स्त्री की मनोवैज्ञानिकता एवं नारी संवेदना' से ओत-प्रोत है। शायद इसका कारण यह भी हो सकता है कि, मंजुल भगत' स्वयं एक भावुक लेखिका हैं। भावुक लेखिका की उपन्यासों में 'नारी संवेदना' को पाया जाना कोई विचित्र बात नहीं है। मंजुल भगत के उपन्यासों में चित्रीत पात्रों का

मनोवैज्ञाकि अध्ययन करते समय यह बात स्पष्ट हो जाती है कि, हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में उनका योगदान सर्वथा विशिष्ट एवं मौलिक है।

छठा अध्याय

मूल्यांकन एवं निष्कर्ष

मूल्यांकन एवं निष्कर्ष इस शोध कार्य का अंतिम अध्याय है, इस अध्याय में सम्पूर्ण शोध-प्रबन्ध का सार रूप में वर्णन है, तथा अन्य अध्यायों में वर्णित सम्पूर्ण सामग्री का निचोड़ रखा गया है। अंत इस अध्याय में सभी अध्यायों के निष्कर्ष निकालकर विश्लेषण ओर अवलोकन किया गया है। इस अध्याय का महत्त्व क्यों है कि, इसके अध्ययन से सम्पूर्ण शोध-प्रबन्ध समझ में आ जाता है। मूल्यांकन एवं निष्कर्ष के बाद परिशिष्ट में आधार ग्रंथ, संदर्भ ग्रंथ, शब्दकोश और पत्र-पत्रिकाओं की सूची दी गई है।

7. अनुसंधान का महत्व (Importance of Research) :

मंजुल भगत के उपन्यास की कथावस्तु और सामाजिक मूल्य" यह अनुसंधान कार्य के उपरांत यह ज्ञात हुआ है कि,मंजुल भगत के उपन्यासों में चित्रित नारी और उस से संबंधिन संवेदना का चित्रण है, जिसमें नारी की सही अथवा गलत छवि का अंकन होता है। कथावस्तु में उनके माध्यम से सामाजिक मूल्य को व्यक्त करना है। उपन्यासकार का उद्देश्य ही 'नारी संवेदना' तथा उनके समस्या को सुलझाना है। इसलिए मंजुल भगत जी का योगदान हिंदी उपन्यास साहित्य में स्त्री संवेदना के लिए महत्वपूर्ण रहा है। समकालिन महिला उपन्यासकारों ने भी प्रमुख रूप से समाज में व्याप्त 'नारी संवेदना' और उनकी मानसिकता को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। शोध की दृष्टि से "मंजुल भगत के उपन्यास की कथावस्तु और सामाजिक मूल्य" का अध्ययन होना समय की माँग है। क्योंकि उनके उपन्यासों की 'नारी संवेदना' पर स्वतंत्र रूप से आजतक अनुसंधान कार्य नहीं हुआ है । "मंजुल भगत के उपन्यास की कथावस्तु और सामाजिक मूल्य" का जो प्रयोग किया है, उसका अध्ययन अपना महत्त्व रखता है। उपन्यासों की कथावस्तु के रूप में 'नारी संवेदना' का प्रयोग किया है, उसका अध्ययन होना समय की जरूरत है। अर्थात लेखिका की उपन्यासों की कथावस्तु द्वारा 'नारी संवेदना' को समझना शोध का अपना महत्त्व है।

8. अनुसंधान की उपयोगिता (Research Utility):

मेरे शोध की उपयोगिता यह है कि, हिन्दी साहित्य में मंजुल भगत के उपन्यास की कथावस्तु और सामाजिक मूल्य" के नये प्रयोगों और साहित्य को मानव यथार्थ के नए सिद्धातों से जोड़कर नये आयाम स्थापित किये हैं, तथा इस शोध विषय के माध्यम से 'नारी संवेदना' का चि्त्रण, समाज में नारी की पीड़ा घुटन समस्याओं से परिचित कराकर साहित्य को एक नई दृष्टि देने का मेरा एक नगण्य प्रयास होगा । मंजुल भगत का संपूर्ण उपन्यास साहित्य 'नारी संवेदना' से ओत-प्रोत है। शायद इसका कारण यह भी हो सकता है कि, मंजुल भगत' स्वयं एक भावुक लेखिक हैं । भावुक लेखिक की उपन्यासों में 'नारी संवेदना'

का पाया जाना कोई विचित्र बात नहीं है। मंजुल भगत के उपन्यास साहित्य का अध्ययन करते समय यह बात स्पष्ट हो जाती है कि, हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में उनका योगदान सर्वथा विशिष्ट एवं मौलिक है।

उन्होंने अधिकांशत: नारी जीवन को केंद्र में रखकर उपन्यास साहित्य की रचना की है। इसलिए इसमें 'नारी संवेदना' से जुड़ी समस्याएँ अधिक नजर आती हैं। उन्होंने नारी के आंतरिक दु:ख, दर्द एवं पीड़ा के साथ साथ अन्याय एवं अत्याचार के प्रति विद्रोह करके, परिवार के भरण-पोषण के लिए काम करनेवाली नारी का चित्रण अपने उपन्यास साहित्य में बखूबी किया है। नारी का प्रेम, त्याग, भावुकता, विद्रोह आदि का विवेचनात्मक अध्ययन यहाँ दिखाई देता है। नारी के प्रति पुरुष की उपेक्षा तथा अन्याय एवं अत्याचारों के बावजूद उसका अपने परिवार को बिखरने से बचाना मंजुलजी की रचना की काफी महत्वपूर्ण लगती है।

9. अनुसंधान की उपलब्धियाँ (Research achievements):

मंजुल जी के उपन्यासों की विशेषता यह है, कि उनमें विभिन्न विचारों द्वारा हमारे समाज में घटित घटनाओं के अलग-अलग पहलू को सामने लाने का प्रयास किया है। भाषा शैली की दृष्टि से भी मंजुल भगत के उपन्यास साहित्य अपनी अलग पहचान बनाता है। इसी कारण मंजुल भगत हिन्दी उपन्यास साहित्य में लोकप्रिय बनी है। "मंजुल भगत के उपन्यासों की कथावस्तु और सामाजिक मूल्य" के विविध आयाम शोध-विषय के अध्ययन के उपरांत निष्कर्ष रूप में जो तथ्य प्राप्त हुए हैं, वे निम्नलिखित रूप से उपलब्धियाँ प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

1. हिंदी साहित्य क्षितिज पर नारी के बाद के युग में एक सुप्रतिष्ठित एवं गणमान्य नाम है, मंजुल भगत जी का लिया जाता है।
2. मंजुल भगत बहुमुखी प्रतिभा के, धनी एवं बहुआयामी साहित्यकार हैं। कहानी, उपन्यास, निबंध, संस्मरण, यात्रा-वर्णन, समीक्षा आदि विभिन्न विधाओं के प्रणेता वास्तव में 'नारी संवेदना' के हमदर्दी है। मंजुल भगत जी अपनी भारतीय संस्कृति से जुड़े हुए प्रमुख उपन्यासकार हैं। वस्तुत: मंजुल भगत जी बीसवीं सदी तथा इक्कीसवीं सदी के संधि-स्थल के युगचेता, युगदृष्टा, युगसृष्टा एवं कथाकारों में मंजुल भगत जी का स्थान मील के पत्थर के समान है।
3. गुणवत्ता एवं विविधता की दृष्टि से हिंदी उपन्यास साहित्य में मंजुल भगत जी का योगदान 'नारी संवेदना' में अद्वितीय है। वास्तव में मंजुल भगत जी ने 'नारी संवेदना' को पल्लवित किया है।
4. मंजुल भगत जी के उपन्यास संसार ग्रामांचल तथा नगरीय-महानगरीय जीवन बोध 'नारी संवेदना' पर आधारित है।
5. मंजुल भगत जी के उपन्यास सामाजिक मूल्य, मानव जीवन की उन अभिवृत्तियों से संबन्धित हैं, नारी को विस्तृत सीमा को गति प्रदान करती हैं।

6. सार्वभौमिक सामाजिक मूल्य जो मूल्य सम्पूर्ण समाज में फैले होते है, और सभी लोगों पर लागु होते हैं । जैसे सच्चाई सभी समाज में उत्तम गुण के रूप में स्वीकार की जाती है । विशिष्ट सामाजिक मूल्य जो मूल्य किसी समाज विशेष तक ही सीमित होते है । मंजुल भगत के उपन्यास जाति, धर्म, प्रान्त आदि के आधि न रहते हुए मानवतावादी दृष्टि से है, तो यह व्यवहार विशिष्ट मूल्यों से संबन्धित माना जाएगा।
7. मनुष्य का सर्वप्रथम परिचय ही सामाजिक संस्था परिवार से होता है । परिवार के द्वारा ही उसके समस्त वैयक्तिक, आवश्यकताओं की पूर्ति होती है । व्यक्ति के सामाजिक तथा सांस्कृतिक मूल्यों की निर्मिति तो समाज द्वारा होती ही है, उसके जैविक तथा मनोजैविक मूल्यों की स्वीकृति के लिए भी उसे समाज पर ही आश्रित रहना पड़ता है । समाज मूल्यों का निर्माण व स्वरूप निर्धारण ही नही करता वरन् उसकी अभिव्यक्ति एवं प्रकाशन का माध्यम तथा उसकी पूर्ति के स्वरूप को भी निश्चित करता है । जैसे मंजुल भगत के उपन्यासों मे व्यक्त सामाजिक मूल्य है, किन्तु इसकी अभिव्यक्ति व पूर्ति के लिए व्यक्ति कों सामाजिक-संस्था- विवाह पर निर्भर रहना पड़ता है ।
8. सामाजिक मान्यताएँ व्यक्ति में सामाजिकता का विकास करती है और उसकी मूल्य-दृष्टि का निरन्तर नियमन करती रहती है । समाज में अलग-अलग प्रकार के संस्कार आदर्श, नाम प्रचलित होते हैं, जो प्रत्येक व्यक्ति को उसके बाल्यकाल से ही प्रभावित करते हैं ।
9. मंजुल भगत जी के उपन्यासों की ‘नारी संवेदना’ में अंकित है, पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक तथा नारी जीवन की बहुमुखी यथार्थ ‘नारी संवेदना’ का विवेचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

10. अनुसंधान कार्य की मौलिकता (Originality of Research Work) :

अध्ययन को सरल व सुगठित बनाने के लिए विषय को निश्चित रेखाओं व सीमाओं में बाँध लेना श्रेयस्कर होता है, क्योंकि विषय को परिसीमित कर लेने से दृष्टि में भटकाव नहीं आता और लक्ष्य की ओर उन्मुखता बनी रहती है । प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध अर्थात “मंजुल भगत के उपन्यासों की कथावस्तु और सामाजिक मूल्य” से संबन्धित अनेक पहलुओं पर विचार किया गया है । यह विषय व्यापक गंभीरता लिए हुए है। अत: इस पर केन्द्रित होकर कार्य करना अपेक्षित है ताकि मंजुल भगत जी की उपन्यासों में व्यक्त ‘नारी संवेदना’ और सामाजिक मूल्य को स्पष्ट रूप से समझा जा सके। यह विषय शोध -कार्य की दृष्टि से नवीन एवं मौलिक है।

11. अनुसंधान कार्य की व्याप्ति और सीमाएं (Research it's Scope and Limitation) :

“मंजुल भगत के उपन्यासों की कथावस्तु और सामाजिक मूल्य” यह शोध-प्रबंध हिंदी साहित्य की व्यापक आयाम की अभिव्यक्ति करती है। प्रस्तुत विषय पर अनुसंधान की रूपरेखा लिखते समय इस

विषय के विविध आयाम मेरे सामने आये है। प्रस्तुत शोध की अपनी सीमा के कारण उन विविध आयामों का विस्तृत विवेचन करना संभव नहीं होगा। अत: भविष्य में निम्न विषय पर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान कार्य कर सकता है।

1. मंजुल भगत के उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन।
2. मंजुल भगत के कथा साहित्य में व्यक्त कामकाजी नारी।
3. मंजुल भगत के उपन्यासों में व्यक्त कार्यक्षेत्रीय जीवन की उपज।
4. मंजुल भगत के उपन्यासों में व्यक्त सांस्कृतिक अध्ययन।
5. मंजुल भगत के उपन्यासों में व्यक्त नारी जीवन संघर्ष।
6. मंजुल भगत के कहानियों में 'नारी चेतना'

यह मेरी विषयगत मर्यादा है, तथा विषय की अति व्यापकता के कारण मैं, इन विषयों के प्रति ध्यान नहीं दे सकी, इसलिए भविष्य में शोधार्थी इन विषयों को चयन कर संशोधन कार्य कर सकता है। तथा इन कमियों को पूरा कर सकते हैं।

12. मूल्यांकन एवं निष्कर्ष: (Evaluation Cum&Conclusion):

1. मंजुल भगत जी के उपन्यासों में नारी मन को 'नारी संवेदना' बनाए रखने तथा उनकी 'नारी चेतना' को विकसित करने में विशेष भूमिका निभाई है। उनके उपन्यास साहित्य में चित्रित प्रत्येक युग की 'नारी संवदना' एवं सामाजिक मूल्य को अलग महत्व प्राप्त है। क्योंकि लेखक ने गाँव की अनपढ़ नारी से लेकर आधुनिक काल की फैशनेबल नारी तक की 'संवेदना' को अत्यंत सूक्ष्मता के साथ अभिव्यक्त किया है। प्राय: वे अपने उपन्यासों में 'नारी संवेदना' का समर्थन करते दिखाई पड़ते हैं। मंजुल भगत जी पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के विरुद्ध हैं। समाजवादी व्यवस्था की स्थापना का लक्ष्य समाज में सब लोगों को योग्यता, श्रम एवं काम के अवसरों का विकास करने की सुविधा अभिव्यक्त किया है।
2. मंजुल भगत जी नारी वादी विचारधारा से प्रभावित थे। इसलिए उनके उपन्यासों में सहज ही नारी की नीतियों की आलोचना और सोच की स्पष्ट झलक दिखती है। सिंहावलोकन में जहाँ उन्होंने नारी जीवन की कथा लिखी, नारी संवेदना का सिंहावलोकन करते हुए, उसकी कमियों और कमजोरियों को भी अपने उपन्यास में चित्रित किया है। मंजुल भगत जी प्रगतिशील विचारों की नारी है। इन्होंने समाज में प्रचलित नारी की मान्यताओं और परंपराओं को बड़े नजदीक से देखा। जहाँ एक ओर इन्होंने समाज को प्रगति के मार्ग पर अग्रेसर करने वाली नारी मान्यताओं को महत्त्व दिया है, वहीं समाज में विकार उत्पन्न करने वाली सामाजिक रूढ़ियों तथा परंपराओं आदि का कड़ा विरोध किया है।

3. मंजुल भगत के संपूर्ण उपन्यास सामाजिक मूल्यों को अर्जित करती है। इसमें सामाजिक के अंतर्गत व्यक्ति, परिवार तथा समाज आदि सामाजिक व्यवस्थाएँ, संस्कार, आदर्श, नाम, रूढ़ि, परंपरा, सभ्यता और संस्कृति आदि सामाजिक मान्यताएँ आमतौर से दिखाई देती है। सामाजिक मूल्य के अंतर्गत शिक्षा, धर्म, दर्शन, नीति, विज्ञान, कला, साहित्य आदि आ जाते हैं, जो कि मंजुल भगत के उपन्यास एक प्रमाणिक दस्तावेज है।

4. उपन्यासों की भाषाओं में सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक व्यवस्था के प्रत्तो आक्रोश और विद्रोह दिखाई देता है। साथ ही भाषा सहज, सरल होकर भी अमानवीय पशुतुल्य जीवन को प्रकट करने में सफल है। भाषा में पारंपरिक सौंदर्य का विरोध किया गया है। नए मुहावरें, लोकोक्तियाँ,गाली-गलोच वाली अभद्र भाषा प्रयोग किया है।

5. भूमंड़लीकरण के युग में साहित्य की समीचीनता स्वयं प्रभावित होती है। आधुनिक विस्तृत राष्ट्रीयता, उदात्त अन्तर्राष्ट्रीय चेतना के रूप में विश्व-बंधुता और मानवता का स्वर, मंजुल भगत जी के साहित्य में प्रस्फुटित और स्पंदित हो रहा है। तो इस महत्वपूर्ण कार्य को उन्होंने अपने साहित्य-सृजन द्वारा पूर्ण किया है।

13. परिशिष्ट : (Appendix)

अनुसंधान कार्य में परिशिष्ट का उपयोग अनुसंधान कार्य के अंत में किया जाता है। परिशिष्ट में अध्ययन सहित शोध पत्र, के प्रारूपण के लिए एक शैली दिशानिर्देशों का पालन करता हैं। परिशिष्ट में सामान्य तौर से आपके पाठ स्त्रोत, तालिका विवरण, आंकड़ा संसाधन, चार्ट, संदर्भ ग्रंथ, आधार ग्रंथ, मूल ग्रंथ या अन्य ग्रंथों को परिशिष्ट में जोड़ा जाता है, पुस्तक के बारे में, प्रकाशन के बारे में, प्रकाशन वर्ष के बारे में आगे की व्याख्या हो सकती है। या अन्य जानकारी में निर्दिष्ट किया जाता है। इस तरह से परिशिष्ट अनुसंधान कार्य की सामग्री है, जिसे अनुसंधान कार्य में अद्यतन किया जाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

(अ) मूल ग्रंथ :

उपन्यास

1. मंजुल भगत, टूटा हुआ इन्द्रधनुष्य, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 1976
2. मंजुल भगत, लेड़ीज क्लब, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 1976
3. मंजुल भगत, अनारो, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1976
4. मंजुल भगत, बेगाने घर में, सरस्वती विहार, नई दिल्ली, 1978
5. मंजुल भगत, खातुल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1983
6. मंजुल भगत, तिरछी बौछार, राजपाल एण्ड सन्स, नई दिल्ली, 1984
7. मंजुल भगत, गंजी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1983

कहानी संग्रह

1. मंजुल भगत, गुलमोहर के गुच्छे, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 1974
2. मंजुल भगत, क्या छूट गया, धर्मपाल एण्ड सन्स, नई दिल्ली, 1976
3. मंजुल भगत, दूत, नैशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 1994
4. मंजुल भगत, चचित कहानियाँ, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 1994
5. मंजुल भगत, अंतिम बयान, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2004

(आ) आधार ग्रंथ :

1. अजिता के. नायर, सत्तरोत्तरी हिंदी कहानियों में बदलते मानवीय संबंध, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, 2000
2. डॉ.अनिता, कृष्णा सोबती के कथा साहित्य में स्त्री का स्वरूप, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, 2006
3. डॉ.अनिल गोयल, हिन्दी कहानी में नारी की सामाजिक भूमिका, आर्याना पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 1978
4. डॉ-अमर ज्योति, मंजुल भगत के कथासहित्य में नारी चेतना,अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर, 1999
5. श्रीमती आशारानी व्होरा, भारतीय नारी दशा और दिशा, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 1983
6. इंदुप्रकाश पाण्डेय, हिन्दी के अधुनातन नारी उपन्यास, हिन्दी बुक सेंटर, नई दिल्ली, 2004
7. डॉ.इंद्रनाथ मदान, आधुनिकता और हिन्दी उपन्यास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1992
8. डॉ.उषा यादव, हिन्दी की महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवेदना, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1999

9. कमल किशोर गोयनका,मंजुल भगत कथा साहित्य,भाग 2 किताबघर प्रकाशन, नईदिल्ली, 2004
10. डॉ.नगेन्द्र, नयी समीक्षा रु नये संदर्भ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1974
11. नीलम गोयल, स्वातंत्रोत्तर हिन्दी लेखिकाओं के उपन्यासों में अलगाव, गुरुनानकदेव यूनिवर्सिटी, अमृतसर, 1987
12. डॉ.ननीहार गाते, स्वातंत्र्योत्तर महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में यथार्थ के विभिन्न रूप, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1996
13. डॉ.सविता चोखोबा किरते, आठवें दशक की लेखिकाओं के उपन्यास में व्यक्त स्त्री चरित्र, विनय प्रकाशन, कानपुर, 2007
14. डॉ.साधना अग्रवाल, वर्तमान हिंदी महिला कथा लेखन और दांपत्य जीवन, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1995

(इ) हिन्दी कोश ग्रन्थ :

1. नालन्दा विशाल शब्दसागर, श्री नवल जी. आदीश बुक डिपो, नई दिल्ली, 2010
2. मानक हिन्दी अंग्रेजी कोश, राममूर्ति सिंह, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली 1974
3. संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, सं. रामचन्द्र वर्मा पष्ठ सं. 1914
4. अंग्रेजी-हिन्दी शब्द कोश, हरदेव डॉ. बाहरी, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली: सं. 2000
5. हिन्दी साहित्य कोश, धीरेन्द्र वर्मा, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वारणासी, सं. 1985
6. धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी साहित्य कोश, ज्ञानमण्डल लि., वाराणसी, संवत् 2011
7. रामचन्द्र वर्मा, मानक हिन्दी कोश, ज्ञानमण्डल लि., वाराणसी, संवत् 2009
8. श्यामसुन्दरदास (सं.) हिन्दी शब्द सागर (चौथा भाग) नागरी प्रचारिणी सभा, काशी 2018
9. हरदेव बाहरी, बृहत् अंग्रेजी-हिन्दी कोश, ज्ञानमण्डल लि., वाराणसी, संवत् 1969
10. हरदेव बाहरी, राजपाल हिन्दी शब्दकोश, राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली, 2002
11. आचार्य रामचन्द्र वर्मा, डॉ.बदरीनाथ कपूर, उर्दू-हिंदी कोश, शब्दलोक प्रकाशन, वाराणसी, 2008
12. आचार्य रामचन्द्र वर्मा, मानक हिन्दी कोश, चौथा खंड, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 1965
13. डॉ.थीरेंद्र वर्मा, हिन्दी साहित्य कोश भाग- 2, ज्ञानमंडल लिमिटेड विंस, वाराणसी, 2005
14. डॉ. बदरीनाथ कपूर, प्रभात व्यावहारिक अंग्रेजी-हिंदी कोश, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000
15. डॉ.हरदेव बाहरी, हिन्दी-अंग्रेजी शब्दकोश, राजपाल एण्ड सन्स, नई दिल्ली, 2002
16. धमेन्द्रकुमार गुप्ता, संस्कृत-हिंदी शब्दकोश, 1992

(उ) पत्र-पत्रिकाएँ :

1. आजकल, नई दिल्ली
2. आलोचना, नई दिल्ली
3. इन्द्रप्रस्थ भारती, नई दिल्ली
4. एक और अन्तरीप, जयपुर
5. मधुमती, उदयपुर
6. समालोचक, जयपुर
7. साहित्य अमृत, नई दिल्ली
8. साहित्य कुंज, कनाडा
9. सृजन कुंज, श्रीगंगानगर
10. नया ज्ञानोदय, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली

(ऊ) अंग्रेजी ग्रन्थ :

1. Bester Mark, Marriage and Society Macmillan and Co London, Ed- 1976
2. Edward- B. Taylor Primitive Culture Penguin Books, Ed- 1963
3. Forster E.M. Aspects of Novel London, Ed- 1964
4. Hertskovitz M.J. Man and His works Ed- 1965
5. Hudson W.H. An Introduction to the study of Literature London, Ed- 1966
6. Joshi N. V. Metaphysics of Individuation,Ed- 1967

(ऐ) Websites

1. www.books.google.com
2. www.hindiliterature.com
3. www.wikipedia.org/wiki/mausam
4. www.ramdarashmishrablogspot.com

शोधकर्ता

आडे कल्पना हरीलाल
(M.A.B.Ed.M.Phil.)

शोधनिर्देशक

डॉ. सविता किर्ते
(M.A.Ph.D.SET)
हिंदी विभाग
कै.सुशिलादेवी देशमुख वरिष्ठ महाविद्यालय,लातूर